2.सबु पेली हच्या

THE FIRST DEATH

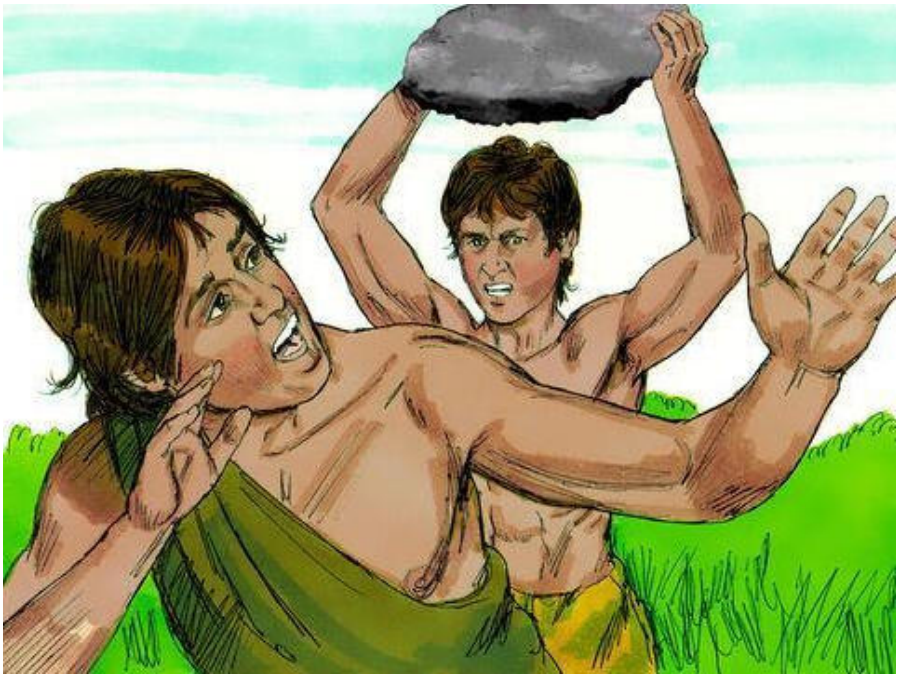

Merwari

2.सबु पेली हच्या

THE FIRST DEATH

Images by © 2021 Sweet publishing.
Prepared By CBL Team.

Merwari
Ajmer, Rajasthan, India

Copyright © 2021, NLCI

http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/
You are free to make commercial use of this work. You may adapt and add to this work. You must keep the copyright and credits for authors, illustrators, etc.

Basic Book in Merwari Language
(Red Level Book-2)

प्रकाशनः-
राजस्थान इनिशिएटिव
बंगला न. 34
कुन्दन नगर श्रीनाथ मन्दिर रोड़
अजमेर 305001,राजस्थान

दो बात

प्रभु की दया से हम मेरवाड़ी क्षेत्र में साक्षरता कार्यक्रम चला रहे है। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ना लिखना सीख सकें। उसी आधार पर इस किताब को भी तैयार किया गया है। यह एक कहानी की किताब है। जिसमें दुनिया कि सबसे पेहली मौत के बारे में बहुत ही कम शब्दों में और बहुत ही सरल रीति से बताया गया है। इस कहानी को हमने अपनी मातृभाषा में ही तैयार किया है, जिससे वह इस कहानी को आसानी से समझ सकें और अपनी मातृभाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें। हमारी यही प्रार्थना है की हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढने लिखने मे सक्षम बन सके।

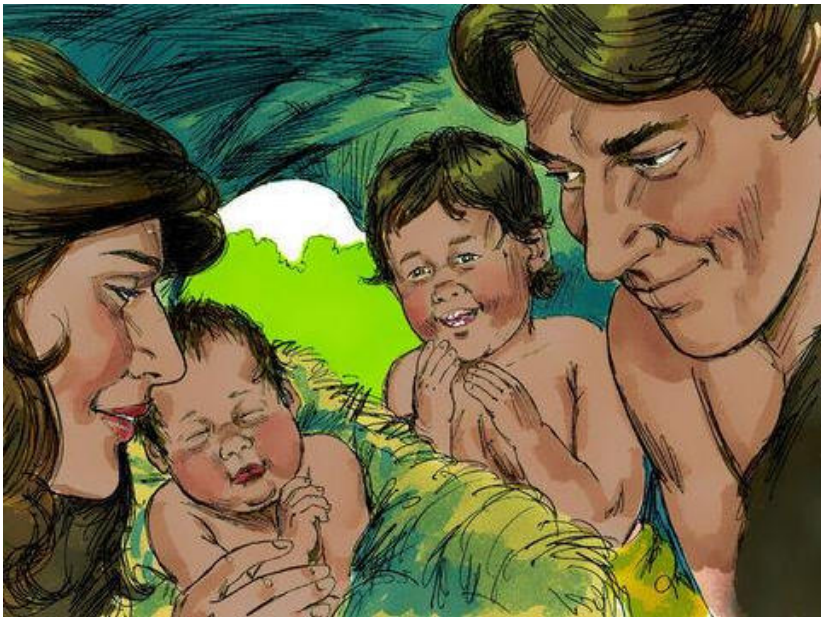

परमेसर मनकँ न बणायो।
ब्याँको नाऊँ आदम ऐर ह०वा राच्यो।
ब्याँके दो टाबर हिया, कैन ऐर हाबिल।

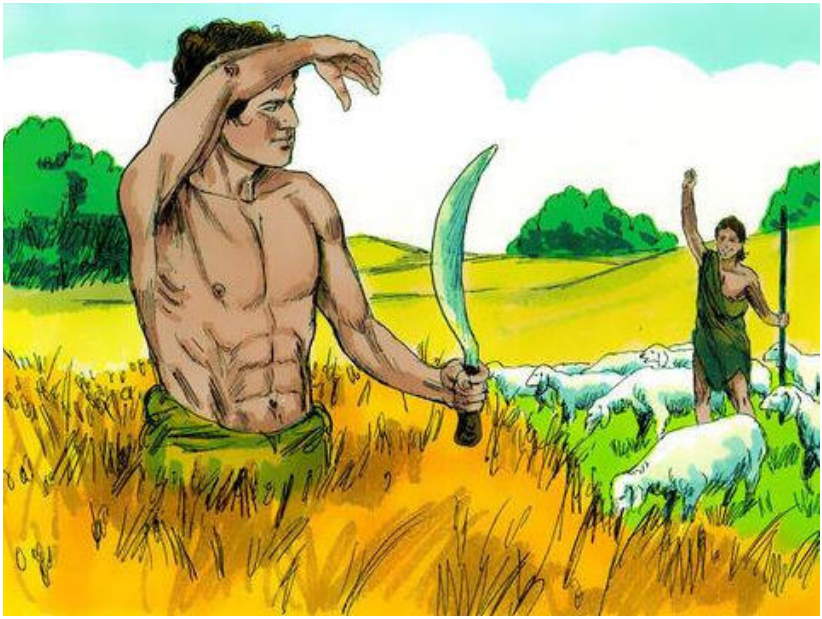

हाबिल छाळी टेटा चराबाळो बणज्यो।
ऐर कैन खेति करबाळो बण्यो।
एक दन कैन ऐर हाबिल दोञ्यु परमेसर केति चडावो ल्याया।

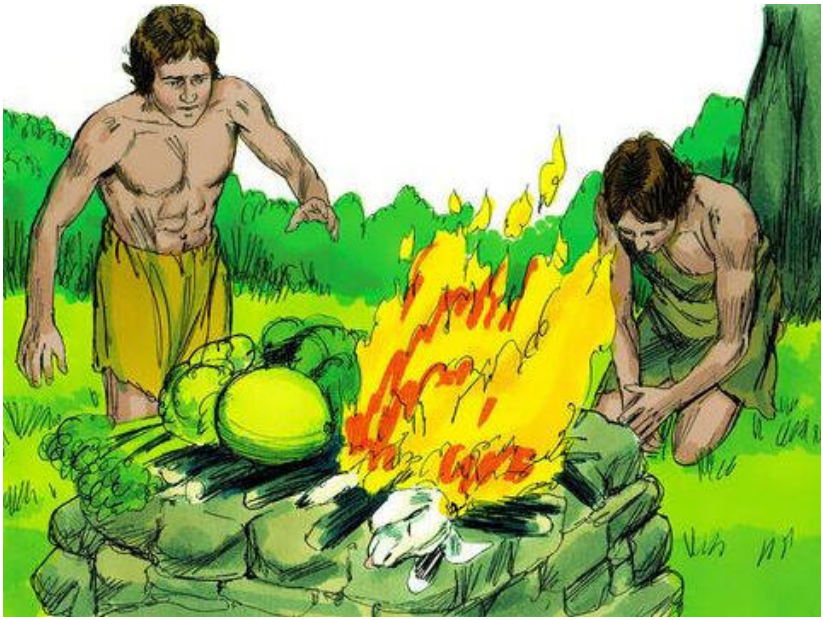

कैन परमेसर केती खुदकी खेति
मुँ थोड़ो-घणो चडावो ल्यायो।
ऐर हाबिल भी छाळी टेटा को
चडावो चडायो।
परमेसर हाबिल का चडावा न तो
मान लियो।

परमेसर कैन को चडावो न मान्यो, तो कैन न गुस्सो आयो। तो परमेसर कियो, तू गरम च्यूँ हे रियो हे।

तू धरम का काम करतो तो थारो चडावो मूँ च्यूँ न मानतो।

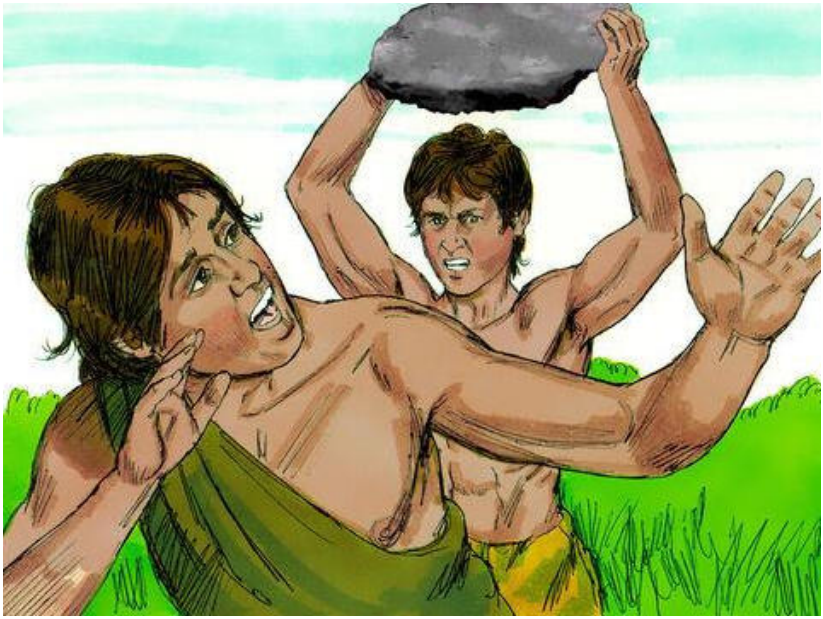

जदँ कैन ऐर हाबिल मैदान म
हा।
तो बटे कैन खुदका भई
हाबिल क द्ये पाड़ि।
ऐर हाबिल की हच्या
करकाडी।

फेर परमेसर जद कैन न पूच्यो
थारो भई हाबिल कटे हे?
तो कैन कियो, “पतो कोनअ, मूँ
काई बिको हाळी हुँ।”
परमेसर बिनअ कियो, “तु ओ
काई कर काड़्यो।

थारा भई को लोई मन जोरको
हाका
करर हेला पाड्र्यो हे। आ धरती
जो थारा भई
को लोई पीबाति मुण्डो फाडी हे।
बीकि तरप ऊँ थारे परँ साप
आज्यो हे।

तु खेत म बाई फेर बि तन
छोकी फ़सल कोन मलई।
तु ई धरती परँ हुनो ई फरतो
फरई।
कैन कियो मूँ आ हजा हेन
कोन कर हँकु।

मूँ थारी नजर की आड म रेऊँ।
ऐर धरती परँ हुनोई भागतो
फअरुँ।
तो जो बी मन मलई बो मन
मार नाअकी।

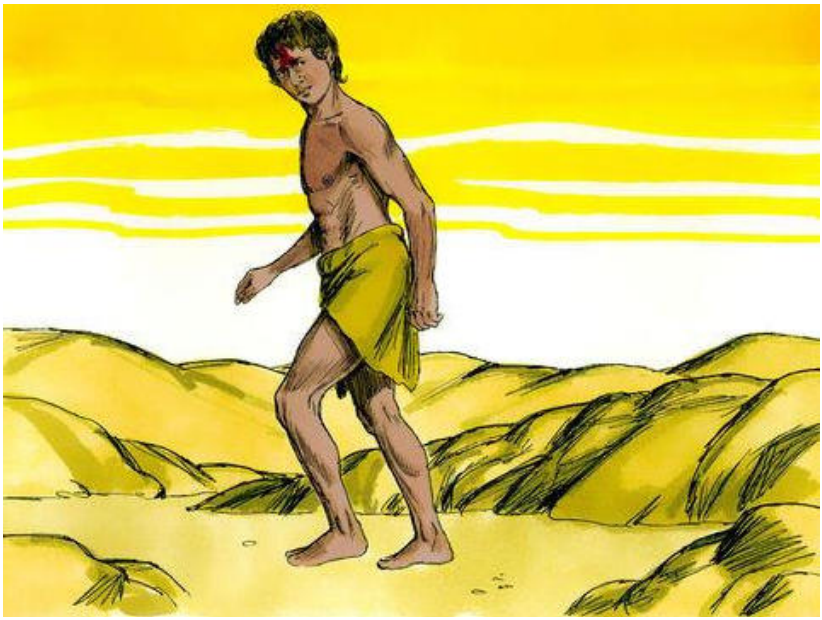

परमेसर कियो जो बी तन मारी।
बिनअ सात गुणा जादा हजा मलई।
फेर बिनअ एक नसाणी दिदि जिनअ देख कोई बिनअ मार न सकई।
अशान दनियाँ म पेलि हच्या ही।

यह किताब एन.एल.सी.आई के द्वारा तैयार की गयी है। हम मातृ भाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अंतर्गत हम अपने क्षेत्र के अलग अलग भागों में सेवा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें और पढ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें। हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मातृभाषा का उपयोग करते है। इसलिये हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिये जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते है, उसे उन्हीं की मातृभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें। हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मातृभाषा में वयस्क शिक्षण ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिए तथा बच्चों के लिए भी अलग-अलग तरह कि पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मातृभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे कि बच्चे अपने बचपन से ही अपनी भाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि, हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक
विकास हो सकें।

॥धन्यवाद॥

Let's grow a library
Bloom®